आपातकाल में सृजन फुलवारी

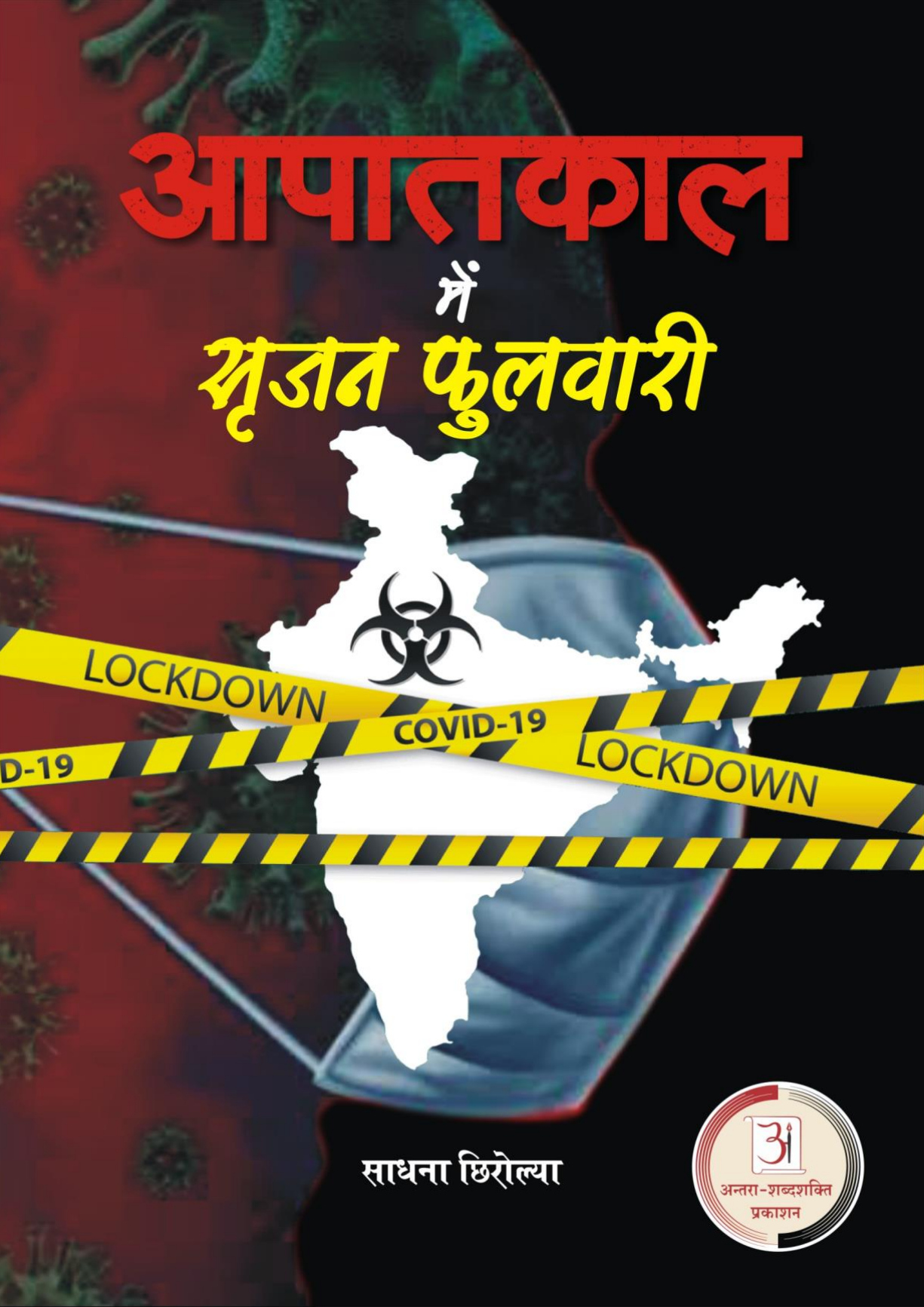

साधना छिरोल्या

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

साधना छिरोल्या

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-109-1

संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी

मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चैक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159

मोबाईल- 9424765259

ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com

वेबसाईट- www.antrashabdshakti

प्रथम संस्करण- 2020, साधना छिरोल्या

मूल्य- 50.00 रूपये

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY SADHANA CHHIROLYA

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्कीस दिन के लॉकडाउन में एक साथ 55 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	वाह! जिंदगी	6
2.	आँगन की तुलसी	7
3.	रे! मानव	8
4.	नारी तुम केवल श्रद्धा हो	9
5.	विनती	10
6.	महक	11
7.	कान्हा की बंसी	12
8.	यादों का मेला	13
9.	शक	14
10.	हाँ-ना	15
11.	मेरा खूबसूरत भेड़ाघाट	16
12.	शरद पूर्णिमा	17
13.	चक्रव्यूह	18
14.	वो सुनहरी सी यादें	19
15.	कलियुग के राम	20-21

वाह! जिंदगी

ऐ! जिंदगी
चल कुछ ऐसा कर जायें,
किसी की अँधेरी जिंदगी में,
एक उजाले की किरण बन जायें।।

ऐ! जिंदगी,..।
न सूरज बन सके तो एक दीप ही बन जायें,
किसी राजा का महल न सही,
किसी गरीब का झोपड़ा ही रोशन कर आयें।।

ऐ! जिंदगी,..
शहर की चमचमाती गलियां न सही,
किसी अँधेरी सुनसान राह पर,
किसी यात्री का हमसफ़र बन जायें।।

ऐ! जिंदगी,..
कोई गगनचुम्बी इमारत न सही,
किसी के आँगन की तुलसी में,
अपना स्थान बना आयें।।

ऐ! जिंदगी चल कुछ ऐसा कर आयें।।

आँगन की तुलसी

मेरे आँगन की तुलसी तो, लगती मेरी अपनी सी।

रोज सुबह जब जल मैं चढ़ाऊँ, लगती बिल्कुल लक्ष्मी सी,
इसकी छाया में जब बैठूं, लागे बिल्कुल बाबुल सी।

जब इसका श्रृंगार करूँ मैं, लागे छोटी बहना सी,
मेरी उदासी दूर है करती, लगती सखी-सहेली सी।

अपनी पीर है जब मैं सुनाऊँ, लागे बिल्कुल माँ जैसी,
रक्षाबंधन, भाईदूज पर, लगती प्यारे वीरा सी।

इसको बढ़ते देख कर, देखो खूब ख़ुशी होती,
सुख-सौभाग्य, यश-कीर्ति, और समृद्धि खूब देती।

हाथ जोड़ कर करूँ मैं भक्ति, तू तो मेरी मैया सी,
हरदम लाज राखना मेरी, तू तो मेरी अपनी ही।

मेरे आँगन की तुलसी तो लगती बिल्कुल अपनी सी।

रे! मानव

प्यासी धरती रोई आज, मानव ने किये हैं ऐसे काज,
गली-मोहल्ले सूने हो गये, कैसा कलियुग आया आज।।

कोरोना तो है एक बहाना, प्रकृति भी है कहती आज,
अपनी करनी देख रे! मानव, हाथ मले पछताये आज।।

शाकाहार का दामन छोड़ के, तनिक भी तुझको आई न लाज,
बेजुबान जानवर है मारे, देख खड़ा पछताये आज।।

धरती माँ का दामन चीरा, हरियाली से मुँह है मोड़ा,
हवा भी न शुद्ध मिलेगी, कुछ तो चिंतन कर ले आज।।

ख्वाहिशों के वशीभूत होकर, तन्हाई के साये में बैठा आज,
लोक-लाज और शर्म भुलाकर, मर्यादा भी तोड़ी आज।।

अब तो चेत जा रे मानव! कल की चिंता करले आज,
योग और आध्यात्म अपनाकर, बच्चों का भविष्य सँवार ले आज।।

नारी तुम केवल श्रद्धा हो

रत्नगर्भा इस जगत की, अपनी ममता से सींचती,
कितने रूप तुझमें है समाये, नारी तुम केवल श्रद्धा हो।।

करुणा, दया, ममता की मूरत, सहनशील और त्याग की सूरत,
पुरुष प्रधान समाज की मारी, नारी तुम केवल श्रद्धा हो।।

कामी, लोभी नजर गड़ाये, कितने रूप में पुरुष सताये,
फिर भी विचलित तू न होती, नारी तुम केवल श्रद्धा हो।।

मीरा, राधा और सावित्री, प्रेम की हो प्रतिमूर्ति,
लक्ष्मीबाई,वीर अवंतिका, नारी तुम केवल श्रद्धा हो।।

ममता में कौशल्या जैसी, त्यागशील, अहिल्या के जैसी,
लक्ष्मी, सरस्वती देवी जैसी, नारी तुम केवल श्रद्धा हो।।

अपनी अश्मिता की खातिर तो, भेड़ियों से भी तू लड़ जाती,
काली,चंडी का रूप है धरती, नारी तुम केवल श्रद्धा हो।

विनती

हे स्वामी बस इतनी दया कर,
मेरी नीयत में खोट न आ पाये,
ऊँची सोच हमेशा रक्खूं,
तुच्छ विचार न आ पाये।।

तेरे ही बाग़ के फूल हैं सारे,
हम सब तो हैं तेरे सहारे,
इतनी कृपा बरसाना प्रभु जी,
कोई फूल तेरा मुरझा न पाये।।

कामी, क्रोधी, पापी, लोभी,
पनप रहे समाज में,
अंत करो अब इनका प्रभु जी,
जन-जन भी हर्षा जाये।।

कंचन सा मन मेरा प्रभुजी,
कभी मलीन न हो पाये।
हाथ जोड़ कर करूँ मैं विनती,
इतनी कृपा बरस जाये।।

महक

आये दिन नवरात्रि के,
धूम मची चहुँओर,
बेला, चन्दन, मोंगरा,
महके चारों ओर।।

जवारे लहलहा उठे,
डांडिया मचाये शोर,
शंख, मृदंग, ढोलक बाजे,
और घंटा बाजे चहुँओर।।

शेर नृत्य और गरबा नृत्य की,
धूम मची चहुँओर,
झूम-झूम के मैया आई,
रौनक छाईं चहुँओर।।

मैया के दिवाले महके,
गुड़हल फूली चहुँओर,
झूम-झूम के पंडा नाचे,
मस्ती छाईं चहुँओर।।

कान्हा की बंसी

कान्हा की बंसी बजी,
मन झूम जाता है,
जहाँ देखूँ वहाँ, कान्हा ही नजर आता है।।

निधिवन की तुलसी,
और गोकुल की गलियां,
वृंदावन की रज में, कान्हा ही नजर आता है।।

मन का मयूरा है,
नाच उठा अब,
दर्पण में झाँकू तो, कान्हा ही नजर आता है।।

काँच की चूड़ी बिकें,
रंग-बिरंगी,
अब तो मनिहारिन में, कान्हा ही नजर आता है।।

बृज का है चन्दन,
पहाड़ी बरसाने की,
मयूर के पंख में भी, कान्हा ही नजर आता है।।
कान्हा की बंसी बजी, मन झूम जाता है।।

यादों का मेला

दो क्षण आँख जो मूँदी,
यादों का मेला सजने लगा।

कुछ मीठी,कुछ कड़वी,
कुछ अतरंगी, सतरंगी,
कुछ कोहरे सी धुंधली,
यादों का मेला सजने लगा।।

कुछ शबनम सी पावन,
कुछ सुर्ख गुलाबों सी,
कुछ काँटे बबूल सी,
यादों का मेला सजने लगा।।

कुछ धूप सी उजली,
कुछ शाम सी सुनहरी,
कुछ रात सी काली,
यादों का मेला सजने लगा।।

दो क्षण आँख जो मूँदी,
यादों का मेला सजने लगा।।।

शक

दुनिया में हर मर्ज का,
होता खूब इलाज,
एक बीमारी शक की है,
जो होती लाईलाज।।

इस बीमारी का जना,
सदा रहे नासाज,
संग औरों को दुःख देने से,
कभी न आता बाज।।

अपनी जिंदगानी करे,
अपने हाथ तबाह,
संग और कई लोगों का,
जीवन होये ख़राब।।

कहत गुणी जन आपसे,
मन को रखिये साफ़,
खुद भी खुश हो लीजिये,
संग कोई न रहे उदास।।

शक की कोई दवा नहीं,
कीजे मन में विचार,
अच्छी सोच है राखिये,
यही एक उपचार।।

हाँ-ना

हाँ-ना का ये चक्कर ऐसा,
चक्रव्यूह के लगता जैसा,
हर मानव की फितरत ऐसी,
हर मानव का मसला ऐसा।।

मानव मन की दुविधा ऐसी,
सब के दो-दो मन हो जाते,
हाँ-ना,हाँ-ना के चक्कर में,
कई फैसले गलत हो जाते।।

जीवन का ये पहिया ऐसा,
द्रुत गति से दौड़ा जाये,
हाँ-ना,हाँ-ना के चक्कर में,
कोई सुनहरा मौका चूक न जाये।।

मन की गति को स्थिर करके,
हाँ-ना का भ्रम दूर तू कर ले,
धीरज मन से करो फैसला,
तभी सुलझेगा हर एक मसला।।

मेरा खूबसूरत भेड़ाघाट

भेड़ाघाट है प्यारा-प्यारा,
न्यारा खूबसूरत नजारा,
संगमरमर की हसीन वादी,
गिरती नर्मदा की अविरल धारा।।

शरद-पूर्णिमा की शुभ्र चाँदनी,
प्राकृतिक छटा होती मनभावनी,
पंचवटी से देखो इसको,
खूबसूरती में नहीं कोई कमी।।

माँ रेवा का है पावन तट,
सैलानियों का लगता जमघट,
एक अजीब सी शान्ति यहाँ पर,
गांधीजी भी कहते हरदम।।

बॉबी, अशोका, मोहन-जोदड़ो,
फिल्मों में फिल्माया इसको,
"मछली जल की रानी" की भी,
शूटिंग में दिखलाया इसको।।

इसका है इतिहास पुराना,
कहते थे दादा और नाना,
जो यहाँ एक बार भी आये,
मन्त्र-मुग्ध होकर के जाये।।

शरद पूर्णिमा

शरद-पूर्णिमा का शुभ दिन,
नाचें-गायें हम सब जन।
देखो-देखो आज है आया,
माँ लक्ष्मी का शुभ जन्मदिन।।

चाँद से अमृत है बरसे,
सुख-सौभाग्य बढ़े हर क्षण।
खीर का है भोग लगाओ,
आयु बढ़े प्रतिक्षण।।

कार्तिक का आरम्भ हुआ,
आये विष्णु जी के दिन।
कंदीलें भी खूब सजाओ,
वैभव मिले हर क्षण।।

श्री नारायण भगवान को,
पेड़े चढ़ते आज के दिन।
महारास भी खूब रचाते,
मेरे कान्हा आज के दिन।।

चाँद से शीतलता मिलती,
विद्या, बुद्धि और लगन।
माता लक्ष्मी से है मिलता,
यशऔर वैभव आज के दिन।।

चक्रव्यूह

सीधा-सादा होने से काम नहीं चलता,
ऊँगली टेढ़ी किये बिना घी नहीं निकलता।।
इस गोल-गोल दुनिया की गोल-गोल बातें।
इसके चक्रव्यूह से कोई नहीं निकलता।

ऊँगली टेढ़ी किये बिना घी नहीं निकलता।।
आस्तीन के साँप हैं, जहर ही उगलते।
इस जहर का कोई तोड़ नहीं निकलता।
ऊँगली टेढ़ी किये बिना घी नहीं निकलता।।

पाप की गठरी को,रोज ही ढोते यहीं।
कथनी और करनी में, भेद भी करते यहीं।
पाप और पुण्य में अन्तर नहीं समझता।
उँगली टेढ़ी किये बिना घी नहीं निकलता।।

हे ईश्वर! बस इतनी दया दे,
इन पर भी अपनी रहमत बरसा दे।
तेरी महिमा को हर कोई नहीं समझता।
ऊँगली टेढ़ी किये बिना घी नहीं निकलता।।

वो सुनहरी सी यादें

कुछ धुंध जो मन की दूर हटी,
कुछ यादों की परतें भी हटीं।।

थी जाड़े की वो सर्द रातें,
सब आग जला, खूब तापें,
गुनगुनी धूप ठंडी बयार,
संग गप्पें मारें चार यार।।

मोज़े, टोपी और मफलर,
तरह-तरह के बनते स्वेटर,
माँ के हाथ में ऊन-सलाई,
गप्प मारतीं चाची-ताई।।

आँवला और गाजर हैं किसतीं,
संग मटर भी खूब छीलतीं,
मूंग-उड़द के पापड़ बनते,
लाल-मिर्च के अचार हैं डलते।।

संयुक्त परिवार हैं रहते,
हँसी-ख़ुशी सब काम हैं करते,
चंचल मन अब यही है गाये,
काश वो दिन अब लौट के आयें।।

कलियुग के राम

आज फिर रावण दहन,
के पंडाल में जाना हुआ।
देख कर वहाँ का दृश्य,
मन बहुत विचलित हुआ।।

आज रावण के दस सिर जीते-जागते,
सामने की दस कुर्सियों पर विद्यमान थे।
जिनके नाम आज विशेष
अतिथियों के रूप में नामांकन थे।

पहले हमारे नेताजी थे,
जो भ्रष्टाचार में सदा लिप्त थे।
दूजे एक अभिनेता थे,
जो एक कांड से अभी-अभी जमानत पर छूटे थे।

तीसरे पर एक मंत्रीजी थे विद्यमान,
जिन्होंने स्वार्थवश कितने किये थे कत्लेआम।
अगली कुर्सी पर हमारे विधायक जी,
साम-दाम की राजनीति की जीती-जागती मूर्ति।

पांचवें एक महंत,
जो संत समाज पर कलंक,
छटवें एक अफसर जी,
जिनका काम ही रिश्वतखोरी ही।

सातवां एक व्यापारी,
जिसे थी मिलावट की बीमारी।
आठवां था सट्टेबाज,
जिसने किया कितनों का जीवन ख़राब।

नवमे एक शराब ठेकेदार,
जो थे कितने घरों की बर्बादी के जिम्मेदार।
और दसवें थे आयोजक जी,
जो सबकी पोल जानकर भी कर रहे थे जी-हजूरी जी।।

आज पंडाल में एक नहीं,
दस जीते-जागते रावण कर रहे थे अट्टहास।
और मैं उलटे पाँव लौट पड़ा,
करने कलियुग के राम की तलाश।।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

रचनाकार

साधना छिरोल्या

E-mail - Sadhnachhirolya123@gmail.com

Mobile - 7089735135

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज में, अपने आस-पास जिंदगी के विभिन्न रंगों से हर दिन रूबरू होता है, और जीवन के इन्हीं रंगों को मैंने अपनी लेखनी द्वारा शब्दों में पिरोने की कोशिश की है।

आज मनुष्य इस आपाधापी भरी जिंदगी में हर छोटी बात पर विचलित हो जाता है। मैंने अपनी रचनाओं में जिंदगी को एक सकारात्मकता के साथ जीने की प्रमुखता दी है। हाँ मैंने यह पुरजोर कोशिश की है कि जो कुछ भी मैं लिखूं वह आमजनमानस के ह्रदय पटल तक सरलता से पहुँच सके।

मुझे विश्वास है कि मेरी सरल एवं सहज लेखनी संवाद बनाये रखने में एक अहम् भूमिका निभायेगी।।

आप सबका आशीर्वाद यूँ ही बना रहे।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331

संपर्क- 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-109-1

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com

Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/

Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/